मार्च १९९९ हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

आओ, जन्म-शताब्दी महोत्सव मनाएं!

जीवन ने पचहत्तर बसंत देख लिये।

कोई आया और कहने लगा, आप के इस जन्मदिवस पर अमृत महोत्सव मनायेंगे।

अमृत महोत्सव?

याने जो अब तक मृत नहीं हुआ है, उसका महोत्सव। पर जो पचहत्तर बसंत देख कर मृत नहीं हुआ, वह कुछ और बसंत देख लेने के बाद मृत तो होगा ही। ऐसे किसी मर्त्यधर्मा व्यक्ति का अमृत महोत्सव कैसा?

अमृत महोत्सव उन परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन का मनाएं। जिनका भौतिक-शरीर तो मृत हो गया, जिनकी रूप-काया तो मृत हो गयी, पर हम अपनी अथाह श्रद्धा के बल पर उनके यश-शरीर को, उनकी कीर्ति-काया को मृत नहीं होने देंगे। चिरकाल तक अमृत रखेंगे। यही सार्थक अमृत महोत्सव होगा।

उनकी इस प्रथम जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर कृतज्ञता विभोर होकर हम सब संकल्पवद्ध हों कि उस युग पुरुष बोधिसत्व की कीर्तिकाया को चिरस्थाई बनायेंगे। केवल आज की ही नहीं, बल्कि सदियों तक की भावी पीढ़ियों के विपश्यी परिवार उनके उपकार को नहीं भुलायेंगे। जब तक धरती पर शाक्यमुनि भगवान गौतम बुद्ध की पावन स्मृति जीवित रहेगी, तब तक इस बुद्ध-पुत्र के असीम उपकार की यशस्वी याद भी बनी रहेगी।

उपकार तो ब्रह्मदेश म्यंमा का भी नहीं भूलेंगे, जिसने सन्तों की गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा मूल बुद्धवाणी को ही नहीं, बल्कि तथागत द्वारा मानवजाति को दी गयी उनकी सबसे महान भेंट कल्याणी विपश्यना को भी शुद्ध रूप में सुरक्षित रखा।

असीम उपकार उन श्रद्धेय भिक्षु प्रवर लेडी सयाडो का भी, जिन्होंने सदियों से भिक्षुओं द्वारा सुरक्षित रखी गयी विपश्यना विद्या को गृहस्थों के लिए न केवल सुलभ बना दिया बल्कि एक गृहस्थ आचार्य को प्रशिक्षित भी कर दिया।

असीम उपकार उन प्रथम गृहस्थ आचार्य सयातैजी का भी, जिन्होंने इस विशिष्ट उत्तरदायित्व को अत्यंत विलक्षणरूप से निभाया, जिससे कि लोग इस तथ्य के प्रति आश्वस्त हुए कि एक गृहस्थ भी मैत्रीसंपन्न कुशल विपश्यनाचार्य की सफल भूमिका अदा कर सकता है।

और फिर उनके प्रमुख शिष्य सयाजी ऊ बा खिन के उपकार का तो कहना ही क्या! जिनके अदम्य उत्साह और अपूर्व धर्मसंवेग के फलस्वरूप यह मुक्तिदायिनी विद्या हम सब को मिली। सदियों पूर्व से विलुप्त हुई जिस विपश्यना विद्या को **योगिनांचक्रवर्ती** शाक्यमुनि सिद्धार्थ गौतम ने केवल अपने ही नहीं, बल्कि अनेकों के कल्याण के लिए खोज निकाली थी, वह विद्या कुछ ही सदियों बाद अपनी जन्मभूमि भारत में ही नहीं, बल्कि स्वर्णभूमि म्यंमा को छोड़ कर सर्वत्र पुनः लुप्त हो गयी। कितना अटूट विश्वास था सयाजी के मन में इस पुरातन मान्यता का कि यह विद्या अब फिर जागेगी और अपने देश वापस लौटेगी। वे बार-बार कहते थे कि कल्याणी विपश्यना के पुनर्जागरण का डंका बज चुका है और अब अपनी जन्मभूमि भारत में इसका शीघ्र ही पुनरागमन होगा। भारत में इस समय अनेक पुण्यपारमी संपन्न लोग जन्मे हैं जो इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे और तदनंतर यह सकल विश्व में छाये अविद्या के अंधकार को चीरती हुई प्रभासमान होगी तथा अमित लोक कल्याण करेगी।

वे कहा करते थे कि सदियों पूर्व म्यंमा इस विद्या को प्राप्त कर भारत का ऋणी हुआ था। उसे अब यह ऋण चुकाना है, भारत को विपश्यना विद्या पुनः लौटानी है। वे यहां पधार कर यह पुनीत कार्य स्वयं किया चाहते थे, परंतु कर नहीं पाए। यहां आ नहीं पाए। भले सशरीर नहीं आ पाए, परंतु अपने धर्मपुत्र के साथ दिव्य शरीर में यहां अवश्य आए और अपना धर्म-संकल्प पूरा करवाने में सहायक हुए।

विपश्यी साधक साधिकाओं के मन में यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि उन्हें यह अनमोल विद्या किसी गोयन्का से मिली है। गोयन्का तो केवल माध्यम मात्र है। वस्तुतः उन्हें विपश्यना तो सयाजी ऊ बा खिन से मिली है। भारत आकर जुलाई १९६९ में जब पहला शिविर दिया, तब से लेकर अब तक प्रत्येक शिविर लगाते हुए वह इसी तथ्य की घोषणा करता रहा है और भविष्य में भी करता ही रहेगा। आनापान देते हुए शिविर में सदैव उसकी यह धर्मवाणी गूंजती है –

“गुरुवर! तेरी ओर से, देऊं धरम का दान।...”

और इसी प्रकार विपश्यना देते हुए भी –

“गुरुवर! तेरा प्रतिनिधि, देऊं धरम का दान।...”

और मैत्री के पश्चात शिविर समापन करके अपने निवास कक्ष में लौट कर भी –

“गुरुवर! तेरो पुन्य है, तेरो ही परताप।
लोगां नै बांट्यो धरम, दूर करण भवताप॥”

अन्य सहायक भी यही टेप चला कर शिविर लगाते हैं और भविष्य में इस पीढ़ी के ही नहीं, भावी पीढ़ियों के भी सभी आचार्य यही टेप चला कर शिविर लगायेंगे। अतः स्पष्ट है कि शुद्ध विपश्यना के पुनः भारत लौटने और भारत से सारे विश्व में फैलने का वास्तविक श्रेय परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन को ही है। उनके उपकार को कोई भी विपश्यी साधक कैसे विस्मृत कर सकता है भला!

यह एक ज्वलंत ऐतिहासिक तथ्य है कि यदि म्यंमा (बर्मा) नहीं होता तो विपश्यना कायम नहीं रहती। यदि विपश्यना कायम नहीं रहती तो लेडी सयाडो नहीं होते। यदि लेडी सयाडो नहीं होते तो सयातैजी नहीं होते। यदि सयातैजी नहीं होते तो सयाजी ऊ बा

खिन नहीं होते और यदि सयाजी ऊ बा खिन नहीं होते तो गोयन्का कहां से होता? गोयन्का तो सयाजी का ही मानस पुत्र है। सयाजी ऊ बा खिन के करुण मानस में भारत का पुरातन ऋण चुकाने का प्रबल धर्मसंवेग न जागता और भारत तथा विश्व भर में विपश्यना के फैलाव की धर्माकांक्षा न जागती तो जो कुछ हुआ है, वह कैसे संभव होता? द्वितीय धर्मशासन के जागरण और प्रसारण में इस महान गृही संत का बहुत बड़ा हाथ रहा है। हम उसके ऋण से कैसे उऋण हो सकते हैं। सचमुच –

रोम रोम कृतज्ञ हुआ, ऋण न चुकाया जाय।

ऋणमुक्त होने का सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण उपाय तो यही है कि –

जीयें जीवन धर्म का!

गुरुदेव की जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर सभी विपश्यी साधक यह दृढ़ निश्चय करें कि हम यथाशक्ति धर्म का जीवन जियेंगे। हम सब सयाजी ऊ बा खिन के शिष्य, उनका गौरव अक्षुण्ण रखेंगे। धर्मपथ पर दृढ़तापूर्वक चलते हुए हम अपना तो कल्याण साधेंगे ही, औरों के कल्याण के भी कारण बन जायेंगे। हमारी धर्ममयी जीवनचर्या को देख कर जिनमें विपश्यना के प्रति श्रद्धा नहीं है, उनमें श्रद्धा जागेगी, जिनमें श्रद्धा है, उनकी श्रद्धा बढ़ेगी। इस प्रकार विपश्यना के प्रसार द्वारा अनगिनित लोगों के कल्याण का पथ प्रशस्त होगा।

पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की असीम मंगल मैत्री के बल पर ही पिछले तीस वर्षों में यहां विपश्यना के पांव दृढ़तापूर्वक जमें हैं। भारत के हर वर्ग के, हर संप्रदाय के लोगों ने इसे सहर्ष अपनाया है। विश्व भर के छहों महाद्वीपों के छोटे-बड़े शताधिक देशों के लोगों ने इसे बिना झिझक स्वीकार किया है और लाभान्वित हुए हैं।

इतने कम समय में जो कुछ हुआ है उसका अवमूल्यन नहीं करना चाहते, परंतु जो कुछ बाकी है वह तो निस्संदेह बहुत अधिक है। जो कुछ संपन्न हुआ, उसे आधार मान कर विश्वव्यापी विपश्यना के बहुमुखी विकास के लिए हम सभी सन्नद्ध हों। इस अवसर पर हम निम्नांकित योजनाओं को पूरा करने में दृढ़तापूर्वक जुट जायँ, जिससे सयाजी ऊ बा खिन की धर्मकामना पूरी करती हुई कल्याणी विपश्यना विद्या आगामी सहस्राब्दी में प्रभूत प्रभावशाली ढंग से प्रवेश करे।

** अब तक भारत तथा विश्व भर में विपश्यना के जितने केंद्र स्थापित हो चुके हैं और जिनमें प्रशिक्षण चल रहा है उनका विकास हो और जो निर्माणाधीन हैं उनका निर्माण शीघ्र से शीघ्र पूरा करें ताकि अधिक से अधिक लोग उनसे लाभान्वित होते रहें।

** धम्मगिरि के प्रमुख विपश्यना केंद्र में प्रति शिविर लगभग ६०० दस दिवसीय साधकों को प्रवेश दिया जा रहा है फिर भी अनेकों को महीनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। स्थानाभाव के कारण अब यहां दस दिवसीय के साथ-साथ २०, ३० और ४५ दिनों के शिविर लग सकने कठिन होते जा रहे हैं। अत: निर्णय किया गया है कि धम्मगिरि पर केवल दस दिवसीय शिविर ही लगें। २०, ३०, ४५ ही नहीं, बल्कि ६०, ७५ और ९० दिनों के लंबे शिविरों के लिए धम्मगिरि के सन्निकट **धम्म तपोवन** नामक एक नए केंद्र की स्थापना की जाय, जहां दीर्घकालीन एकाकी, एकांत तपस्या में लीन होने वाले तपस्वियों और तपस्विनियों को पूर्ण सुविधासम्पन्न एक-एक निवास और एक-एक शून्यागार उपलब्ध हो। इसका निर्माणकार्य शीघ्र पूरा किया जाय ताकि गंभीर साधक इस नए केंद्र में गहराइयों तक डुबकी लगा कर इस विद्या का अत्यधिक लाभ उठा सकें।

** विश्व के अधिक से अधिक लोगों को विपश्यना विद्या का लाभ मिले, इसलिए केवल स्थाई विपश्यना केंद्रों में ही नहीं, बल्कि अनेक देशों में अकेंद्रीय स्थानों पर भी अस्थाई शिविर लगते रहते हैं। ऐसे अकेंद्रीय शिविर अधिक से अधिक स्थानों पर लगें, ताकि अधिकाधिक लोग विपश्यना से लाभान्वित हो सकें।

** भारत, नेपाल, ताईवान, इंगलैंड और अमेरिका के कारागृहों में लगे विपश्यना शिविरों ने बंदी अपराधियों में सुधार की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह शिक्षणक्रम इन देशों में तो आगे बढ़े ही अन्यान्य देशों में भी शीघ्र आरंभ किया जाय।

** भारत और नेपाल में नेत्रविहीन लोगों के लिए अत्यंत फलदायी विपश्यना शिविर लगे हैं। इनका इन्हीं देशों में ही नहीं, बल्कि अन्य देशों में भी फैलाव हो।

** भारत में कुष्ठरोगियों के लिए विपश्यना के शिविर लग रहे हैं, जिनसे उनकी मानसिकता में बहुत सुधार हुआ है। उनकी हीनभावना की ग्रंथियां टूटी हैं। विपश्यना के कारण जीवन में मुस्कान आयी है। इस क्षेत्र का सफल प्रयोग आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

** जुए, तंबाकू और मादक पदार्थों के अनेक व्यसनी विपश्यना के अभ्यास द्वारा व्यसन मुक्त हुए हैं। ड्रग के व्यसन में बुरी तरह जकड़े हुए लोगों का भी व्यसन-विमोचन हुआ है। आस्ट्रेलिया और स्विटजरलैंड में सरकारी सहयोग के साथ इस दिशा में विपश्यना द्वारा बहुत काम हुआ है और हो रहा है। इस लोकोपकारी कार्य को सर्वत्र बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

** भारत तथा अन्य अनेक देशों में प्राइमरी से लेकर हाईस्कूल तक के हजारों छात्र-छात्राएं आनापान से और कॉलेज के विद्यार्थी विपश्यना से लाभान्वित हो रहे हैं। यह कार्यक्रम बहुगुणित रूप में आगे बढ़ना चाहिए ताकि मानव जाति की भावी पीढ़ी सुख-शांति, स्नेह-सौहार्द तथा सद्भावना का जीवन जी सके।

** भारत में, विशेषकर मुंबई शहर में सड़कों पर जीवन बिताने वाले गरीब आवारा बच्चों पर भी आनापान के प्रशिक्षण का सफल प्रयोग किया जा रहा है। इसे भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

** पटिपत्ति विपश्यना सद्धर्म का प्रयोगात्मक पक्ष है। इसका परियत्ति याने सैद्धान्तिक पक्ष उजागर करने के लिए जिस विपश्यना विशोधन विन्यास का गठन किया गया, उसने अपने कार्यक्षेत्र में विशिष्ट सफलता प्राप्त की है। मूल पालि तिपिटक, समस्त अट्ठकथाएं, टीकाएं, और अनुटीकाएं तथा अन्य अनेक ग्रंथों सहित बृहद पालि वाङ्मय एक छोटी-सी सघन तस्तरी में निवेशित कर दिया गया है। अन्य दुर्लभ पालि ग्रंथ भी जहां कहीं उपलब्ध हों, उन्हें

इसमें जोड़ दिया जाना चाहिए। इन ग्रंथों का पुस्तकाकार प्रकाशन भी संतोषजनक गति से आगे बढ़ रहा है।

** इसी प्रकार संस्कृत भाषा के संपूर्ण धार्मिक वाङ्मय को भी निवेशित करने का सराहनीय काम आरंभ कर दिया गया है। उसे शीघ्र पूरा किया जाना आवश्यक है। इससे शोधकार्य गंभीरतापूर्वक संपन्न हो सकेगा और इससे यह जाना जा सकेगा कि वे कौन-से कारण थे, जिनकी वजह से कल्याणी विपश्यना और तत्संबंधी साहित्य इस देश से विलुप्त हुए। ऐसे खतरों के प्रति सजग रहते हुए भारत में पुनः आयी हुई विपश्यना और उसके साहित्य को चिरकाल तक सुरक्षित रखना है। इसीसे गुरुदेव की यह मंगल कामना पूर्ण होगी –**“चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो”** । यह कार्य किसी भी अन्य संप्रदाय के प्रति द्वेषभाव जगाकर कदापि न किया जाय। केवल यथाभूत सत्य का अन्वेषण हो। क्योंकि गुरुदेव सदा **सत्यमेव जयते** की धर्मनीति के ही पक्षधर थे। उनकी कुर्सी के पीछे यही बोल बरमी भाषा में लिखे रहते थे।

** उपरोक्त लक्ष्य को पूरा करने के लिए ही विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय **धम्मकुल** (विश्व विद्यालय) की शीघ्र स्थापना होगी। यहां विभिन्न देशों के छात्र-छात्राओं के निवास और प्रशिक्षण की सुविधा होगी। विदेशी छात्र-छात्राओं को पालि, संस्कृत, हिंदी व अन्य भारतीय भाषाएं सिखायी जायेंगी तथा भारतीय छात्र-छात्राओं को बरमी, श्रीलंकन, थाई, कंबोडियन, चीनी, जापानी, कोरियन, मंगोलियन आदि भाषाओं का प्रशिक्षण दिया जायगा, ताकि ये द्विभाषी अथवा बहुभासी विद्यार्थी देश-विदेशों में जीर्ण-शीर्ण हो रहे पुरातन भारतीय साहित्य का उद्धार करेंगे, इनका अनुवाद करेंगे और इस प्रकार सही माने में गंभीर शोधकार्य संपन्न होगा।

** एक और अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य है। यह जो गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के ऐतिहासिक स्मारक स्वरूप मुंबई में विशाल ‘विपश्यना स्तूप’ के निर्माण का कार्य आरंभ हुआ है, उसे शीघ्र पूरा करना है। इस स्तूप का प्रयोग केवल विपश्यना साधना के लिए ही होगा। इससे गुरुदेव के धर्म-स्वप्न को पूरा करने में सहायता प्राप्त होगी। इसके विशाल धर्मकक्ष में हजारों की संख्या में विपश्यी साधक साधिकाएं, सामूहिक साधना का अथवा एक दिवसीय शिविर का लाभ उठाते रहेंगे। यह सहज अनुमान किया जा सकता है कि जहां १००-५० साधकों की सामूहिक साधना से साधकों को इतना लाभ मिलता है, वहां उसकी तुलना में हजारों की संख्या वाली सामूहिक साधना कितनी प्रभावी और लाभदायी होगी। **‘समग्गानं तपो सुखो’** यह भगवत्वाणी यहां प्रत्यक्ष प्रकट होगी। सामूहिक तप सुखदायी सिद्ध होगा।

इस स्तूप को लेकर अनजान लोगों में भ्रांतियां जागनी स्वाभाविक है। उन्हें लगेगा कि यह किसी संप्रदाय विशेष का प्रतीक निर्मित हो रहा है। परंतु जब वे देखेंगे कि इस स्तूप में विपश्यना साधना के अतिरिक्त कोई सांप्रदायिक कर्मकांड नहीं किया जा रहा, यहां धूप-दीप, नैवेद्य तथा घंटे-घड़ियाल अथवा मूर्ति-पूजन का नामोनिशान नहीं है तो उनकी यह भ्रांति स्वतः दूर होगी।

यह सच है कि बाहर की ओर इसे एक स्तूपनुमा आकृति दिए बिना भी दस हजार व्यक्तियों की सामूहिक साधना के लिए ऐसे एक स्तंभशून्य विशाल हॉल का निर्माण किया जा सकता है। फिर यह सांप्रदायिकता की भ्रांति पैदा करने वाली स्तूप की आकृति क्यों? लोगों की यह भ्रांति भी देर तक नहीं टिक पायेगी, जब वे इस सच्चाई से अवगत होंगे कि यह आकृति चिरकाल तक बर्मा के उपकार की याद बनाए रखने के लिए है। यह स्तूप उस धर्म देश के प्रति हमारी असीम कृतज्ञता का प्रतीक होगा। जब विपश्यना विद्या भारत से पड़ोसी देशों में गयी तो वहां के लोगों ने अपने यहां जो प्रारंभिक स्तूप बनाए वे तत्कालीन भारत के स्तूपों की प्रतिकृति मात्र थे। वे इसीलिए बने कि जब-जब वहां के लोग उन स्तूपों को देखेंगे, तब-तब भारत के उपकार को याद कर नतमस्तक होंगे। ठीक इसी प्रकार यहां के लोग श्वेडगोन की आकृति वाले इस स्तूप को देखेंगे तो वे भी सदियों तक बर्मा के उपकार को याद करेंगे, कि उस देश ने एक अनमोल धरोहर की भांति यह विद्या चिरकाल तक संभाल कर रखी और यह भी कि उस देश में सयाजी ऊ बा खिन जैसे संत गृहस्थ जन्मे, जिनके अदम्य उत्साह के कारण यह पुरातन निधि भारत को पुनः प्राप्त हुई और यहां से विश्व के कोने-कोने में फैली, जिससे कि भारत विश्वगुरु के पुरातन विरुद को पुनः उपलब्ध कर सकने योग्य बना। इस माने में यह स्तूप हमारी कृतज्ञता का प्रतीक होगा, न कि किसी सांप्रदायिकता का। यह स्तूप वस्तुतः भारत में विपश्यना के पुनर्स्थापन का भव्य स्मारक होगा। सयाजी की महानता का कीर्तिस्तंभ होगा।

और स्तूप के बाहर जो विशिष्ट दीर्घा बनेगी, वह शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के गौरवमय महामानवीय ऐतिहासिक व्यक्तित्त्व को काल्पनिक पौराणिक कीचड़ से बाहर निकाल कर अपने उज्वल सत्य स्वरूप में उजागर करेगी। इससे विश्व में भारत का सिर पुनः ऊंचा होगा। यह दीर्घा अत्याधुनिक श्रवण, दृश्य तकनीक द्वारा अत्यंत आकर्षक ढंग से तथागत के जीवन की अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं के साथ-साथ विपश्यना विद्या के पुरातन प्रयोग की सच्चाई को उजागर करेगी। इससे बुद्ध और उनकी सही शिक्षा के बारे में देश में फैला हुआ अज्ञानभरा अंधकार दूर होगा और बहुसंख्यक लोग उनकी सिखाई हुई सांप्रदायिकताशून्य वैज्ञानिक और आशुफलदायिनी विपश्यना को अपना कर अपना कल्याण साध लेंगे। इस विशाल आकर्षक स्तूप को देखने के लिए बाहर से आए हुए अनेक लोग भी विपश्यना साधना से अवगत होंगे और उनमें से अनेक इस देश में अथवा अपने-अपने देश में लौट कर विपश्यना साधना के शिविर में भाग लेकर अपना कल्याण साध लेंगे। इस प्रकार विपश्यना विश्वव्यापी होकर विश्व कल्याण करेगी।

यही तो परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की पुनीत धर्म कामना थी। आओ, उपरोक्त सभी योजनाओं को पूरी करके उनकी इस मंगलकामना को पूरी करते हुए हम अपना भी कल्याण साध लें तथा जन-जन के कल्याण में भी सहयोगी बन जायँ।

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का